इसलिए यह स्वाभाविक सा है कि जो पुरुष परम संसिद्धि-लाभ करके परमधाम कृष्णलोक, गोलोक वृन्दावन को प्राप्त हो गया है, वह यहाँ लौटने की इच्छा नहीं करता। वैदिक शास्त्रों के अनुसार परमधाम हमारी प्राकृत धारणा से अति परे है, वही परम लक्ष्य है। महात्माजन भगवत्प्राप्त भक्तों के मुखारविन्द से निस्यन्दित भगवत्-कथामृत को कर्णपुटों से पीकर क्रमशः कृष्णभावनाभावित भक्तियोग का विकास करते हैं। इस प्रकार वे भगवत्सेवा में इतने निमग्न रहते हैं कि किसी उच्च लोक अथवा परव्योम में जाने की इच्छा उनके मन में कभी नहीं उठती। उन्हें नित्य श्रीकृष्ण के सान्निध्य की ही अभिलाषा रहती है; वे और कुछ नहीं चाहते। इस कोटि के कृष्णभावनाभावित महात्मा जीवन की परम संसिद्धि को प्राप्त हो जाते हैं। अतएव वे परम श्रेष्ठ हैं।

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते।।१६।।

आब्रह्मभुवनात् =ब्रह्मलोक सहित; **लोकाः** =सम्पूर्ण लोक; **पुनरावर्तिनः** = पुनरावर्ती हैं; **अर्जुन** =हे अर्जुन; **माम्** =मुझ को; **उपेत्य** =प्राप्त होकर; **तु** =किन्तु; **कौन्तेय** =हे कुन्तीपुत्र; **पुनर्जन्म** =पुनर्जन्म; **न** =कभी नहीं; **विद्यते** =होता।

अनुवाद

हे अर्जुन ! प्राकृत-जगत् में सबसे ऊपर ब्रह्मलोक से लेकर नीचे तक सब के सब लोक बारम्बार जन्म-मृत्यु रूपी क्लेश से पूर्ण हैं। परन्तु हे कुन्तीपुत्र ! जो मेरे धाम को प्राप्त हो जाता है, उसका संसार में पुनर्जन्म नहीं होता।।१६।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण के दिव्य धाम में प्रवेश करके संसार में कभी न लौटना पड़े, इसके लिए कर्म, ज्ञान, हठ आदि अन्य सब योगों का अभ्यास करने वालों को भक्तियोग अथवा कृष्णभावनामृत की परम संसिद्धि को प्राप्त करना आवश्यक है। परमोच्च प्राकृत लोक अथवा देवलोकों में प्रवेश करने वाले भी जन्म-मृत्यु के चक्र के आधीन बने रहते हैं; उससे मुक्त नहीं हो पाते। जिस प्रकार पृथ्वीवासी उच्च लोकों को जाते हैं, उसी प्रकार ब्रह्म, चन्द्र, इन्द्र आदि उच्च लोकों के निवासियों का इस लोक में पतन होता है। 'कठोपनिषद्' में उल्लिखित 'पञ्चाग्नि विद्या' द्वारा ब्रह्मलोक की प्राप्ति हो सकती है; परन्तु यदि ब्रह्मलोक में कृष्णभावनामृत का अनुशीलन नहीं किया जाय तो कुछ काल बाद पृथ्वी पर फिर लौटना होगा। जो उच्च लोकों में कृष्णभावनामृत का आचरण करते हैं, वे उत्तरोत्तर उच्चलोकों को जाते हैं और फिर महाप्रलय होने पर नित्य भगवद्धाम पहुँचते हैं। इसी प्रकार प्राकृत-जगत् में प्रलय हो जाने पर ब्रह्मा और उनके भक्त, जो निरन्तर कृष्णभावना-परायण हैं, परव्योम में पहुँचकर इच्छानुसार वैकुण्ठ लोकों में प्रवेश करते हैं।